© INNOVATIVE RESEARCH THOUGHTS
Refereed | Peer Reviewed | Indexed
ISSN : 2454 – 308X | Volume : 08 , Issue : 01 | January - March 2022

जयनंदन की कथा में समाज और संस्कृति का विश्लेषण

अमरजीत कुमार
शोधार्थी (हिंदी विभाग), मगध विश्वविद्यालय, बोधगया

शोध निर्देशक
डॉ0 ज्ञान प्रकाश रत्नेश
(हिंदी विभाग), के0 एल0 एस0 कॉलेज, नवादा

शोध परिचय

हिदी उपन्यास हमारे समय के मनुष्य-समाज का एक सच्चा विश्लेषक रहा है। अपनी कथा-गरिमा के अनुकूल समाज के विभिन्न वर्गों और तबकों की समस्याओं से देश की जनता और पाठक को निरंतर साक्षात कराने में हिंदी उपन्यास की मुख्य भूमिका रही है। कई बार हम यह भी अनुभव करते हैं कि हमारे मनुष्य समाज का कोई वर्ग किस प्रकार का जीवनयापन कर रहा है, उसकी असलियत किस यथार्थ पर टिकी है, उसकी लाचारियां क्या हैं, क्या विवशताएं हैं- इन सबकी जानकारी हमें किसी रचनात्मक कृति के माध्यम से ही हो पाती है। आज हम यह पाते हैं कि साहित्य अपनी प्रचलित और नयी विधा में अधिक सूचनात्मक हो रहा है। इससे समाज के विभिन्न वर्गों की आपसदारी नये विवेक का निर्माण भी कर रही है- इसमें संदेह नहीं है। यह भी हम जानते हैं कि सतत बदलावों के दौर में साहित्य का परंपरागत रूप भी बदला है। इसीलिए साहित्य की विधाएं भी इससे पर्याप्त प्रभावित रही हैं। भिन्न-भिन्न प्रांतों के

ISSN : 2454 – 308X | Volume : 08 , Issue : 01 | January - March 2022

रचनाकारों ने वैश्विक स्तर पर हो रहे परिवर्तन के प्रभावों को स्थानीय स्तर पर आंकने का सार्थक श्रम किया है।

जयनंदन इस क्रम के एक समर्थ रचनाकार हैं, उन्होंने अपनी कहानियों और उपन्यासों के माध्यम से आज के पाठक समुदाय को नयी जानकारियों से समृद्ध करने का काम किया है। इनका हाल ही में प्रकाशित 'विघटन' उपन्यास अपनी नितांत नयी कथाभूमि के कारण चर्चित होकर प्रसिद्ध हुआ है। इस उपन्यास की मूल कथा बाजार और पूंजी के बीच पिसते साधारण मनुष्यों के संघर्षों से संबंधित है। अपने साधारण से साधारण जीवन को बनाये रखने के लिए आम आदमी को कितनी मशक्कत करनी पड़ती है- इसकी सटीक अभिव्यक्ति है यह उपन्यास। इस उपन्यास में वैश्विक स्तर पर बढ़ते बाजारवाद की मनोवृत्ति के कारण प्रभावित स्थानीयता को रेखांकित करते हुए रचनाकार ने संप्रदायवाद की खाई के खतरों से भी अवगत कराया है। आज हम यह देखते हैं कि सांप्रदायिकता का विष ऐसे धुल चुका है कि लगता है जैसे हिंदू-मुस्लिम की बात करना भी मानसिक कष्ट का कारण बन जाता है। जबकि हमें इस सच को भी आत्मसात करना चाहिए कि हमारा देश अनेक धर्मों, जातियों और संस्कृतियों का देश है। यहां की बहुसंख्यक आबादी हिन्दुओं की है। उसके बाद मुसलमान हैं। दोनों जातियों के निवास करने से हमारे यहां एक मिली-जुली संस्कृति का विकास होता रहा किंतु ये दोनों ही संप्रदाय मूल रूप से एक हो नहीं सके। इस कृति में उपन्यासकार ने संप्रदायगत आस्था और विश्वास

ISSN : 2454 – 308X | Volume : 08 , Issue : 01 | January - March 2022

को अंकित करते हुए यह स्पष्ट किया है कि सत्ताधारियों और सत्ता-लोभियों ने अपने लाभ के लिए हमेशा इन्हें टकराव की स्थिति में रखना ही बेहतर समझा।

यह भली-भांति जाना जाता रहा है कि हमें आजादी विभाजन की कीमत पर मिली और विभाजन मुसलमानों को अलग राष्ट्र मान कर हुआ लेकिन दूसरी सच्चाई पर अक्सर कम ध्यान दिया जाता है कि हमारें यहां धर्माधारित राष्ट्रीयता के सिद्धान्त को स्वीकार ही नहीं किया गया। बावजूद इसके सत्ताधारी और सत्ताकांक्षी अपने राजनीतिक लाभ के लिए समय-समय पर जाति-संप्रदाय के नाम पर छोटे-छोटे मुद्दे फेंकते रहते हैं। उसी की आड़ में अपने हित-साधन का निर्माण भी वे करते रहते हैं और वही उनका मुख्य ध्येय भी है। इस उपन्यास में अब आबादी के बीच घिर चुके कब्रिस्तान को स्थानांतरित करने के साधारण मुद्दे को तरह-तरह से सांप्रदायिक रंग देकर लाभ लेने की मंशा को स्पष्ट किया है लेकिन इस घटना-प्रसंग को इस रचना के मूल स्वर से नहीं जोड़ा जा सकता है, क्योंकि ये प्रसंग इस कृति में एकदम मुखर नहीं हैं।

उपन्यासकार यहां संकेत रूप में जरूर यह जिक्र करता है कि आजादी और देश के बंटवारे के बाद भारत में रह गये मुसलमानों के सामने अपने अस्तित्व की अनेक समस्याएं पैदा हो गई, उनके परिवार टूट गये। लेकिन आज भी उनकी भावनाओं को इस्तेमाल करते हुए हिंदू और मुसलमानों को पर्याप्त दूरियां दी जा रही हैं। दूसरे रूप में हम यह भी समझें कि अल्पसंख्यक के हितों और अधिकारों को तथाकथित नेतृत्वकर्ता जनता में अपनी स्थायी बाधा के रूप में प्रचारित करते रहते हैं। इस दुष्प्रचार के विरोध से ही इस उपन्यास का आरंभ होता है।

ISSN : 2454 – 308X | Volume : 08 , Issue : 01 | January - March 2022

यह उपन्यास अपने मूल रूप में बाजारवादी मानसिकता के चलते नैतिक और जीवन-मूल्यों के विघटन की स्याह कथा है। इसमें उपन्यासकार ने सोनवारे नरहरि नामक एक पात्र के माध्यम से नैतिकता की रक्षा करते हुए आज के युवाओं की संघर्ष-प्रवृति को प्रकाश में लाने का प्रयास किया। अपने विद्यार्थी-जीवन में नरहरि के शिक्षक रहे ताराकांत जी के आदर्शों के ही बल पर यह एक सुदृढ़ पात्र निर्मित हुआ है। यह पात्र साहसी है, सच्चा है, खरा है, निडर है एक और विशेषण इसे दिया जा सकता है कि वह अडिग निर्लोभी है। आपसी हितों के टकराव में भी इसे किसी भी प्रकार का लालच प्रभावित नहीं कर पाता है। क्योंकि उसने अपने गुरु के बताए नैतिक मार्ग को अपने चरित्र में स्थायी कर लिया है। लेकिन इस कृति की कथाभूमि साथ ही साथ यह भी स्पष्ट करती चलती है कि ऐसे सत्पथ के राही का जीवन कभी भी निर्बाध नहीं रहता है।

इसे हर समय कड़ी चुनौतियों का निरंतर सामना करना पड़ता है और लगभग हार के कगार पर आ जाना होता है। ठीक यही हाल इस आदर्श पात्र का होता है लेकिन वह किसी भी तरह सच्चाई को बचाने के लिए कहीं भी समझौतापरस्त नहीं होता है। उपन्यासकार ने अपनी इस कथाकृति को सिर्फ एक समस्या में ही पात्रों को आदर्शवान बनाकर नहीं खपाया है बल्कि एक स्तर पर अपने समय और समाज के मनुष्य की स्थिति और नियति की पहचान की है। जैसा हम अपने जीवन में आज पा रहे हैं उसकी सच्चाई की जड़ें कुछ और ही हैं। यह उपन्यास सांप्रदायिकता के फुटकर मुद्दे फेंक जन साधारण का ध्यान भटकाकर असल बाजार को लक्ष्य

© INNOVATIVE RESEARCH THOUGHTS
Refereed | Peer Reviewed | Indexed
ISSN : 2454 – 308X | Volume : 08 , Issue : 01 | January - March 2022

करता है। इसीलिए यह उपन्यास अपनी मूल गति में 'विघटन' को प्राप्त होता हुआ ही वर्तमान से भविष्य की ओर जाता है। इसीलिए यह स्वीकारा जाना चाहिए कि प्रासंगिक पहलुओं के साथ कथा-साहित्य अपने समय के इतिहास से मुठभेड़ करने में सक्षम हुआ है। इस कृति में जटिल समग्रता, की अभिव्यक्ति हुई है- इसकी वजह बहुत साधारण-सी है कि भारतीय समाज में जन-जीवन जटिल से जटिलतर और कठिन से कठिनतर हुआ है, लेकिन एक गंभीर बात यह हुई कि ऐसे जन-जीवन की चिंता करने वाली संस्कृति में बहुत बदलाव आ गया है। इसी बदलाव का कलात्मक रेखांकन इस उपन्यास में हुआ है। अक्सर हम उपन्यास के बारे में एक राय रखते हैं कि यह साहित्यिक रूप जीवन-जगत को देखने की एक विशेष दृष्टि है और साथ ही यह समाज का एक विशिष्ट बोध भी है। इसी बिंदु से इस उपन्यास का मूल्यांकन थोड़ा आसान हो जाता है।

इस उपन्यास में दो कथाएं समानान्तर चलती हैं- एक मनुष्य के सामाजिक जीवन की और दूसरी बाजारवादी संस्कृति के साथ पनपती भौतिक संपन्नता की दृष्टि की। दोनों कथाओं के पात्र वही हैं लेकिन निहितार्थ में वे बहुत अन्तर के साथ बदले हुए हैं। यह सही है कि स्वभाव रूप में उपन्यास में दृष्टियों और स्वरों की अनेकता होती है और इसी से रचना में लोकतंत्र आता है। उपन्यास में किसी भी रूप में केवल रचनाकार की निर्णायक भूमिका नहीं होती है। इस कृति में भी हम यही पाते हैं कि यहां प्रत्येक पात्र की दृष्टि और स्वर की स्वतंत्र सत्ता है,

ISSN : 2454 – 308X | Volume : 08 , Issue : 01 | January - March 2022

इसी से कृति में एक मानवीय गरिमा और अर्थवत्ता का निर्माण हुआ है। यह उपन्यास अपने अनेक पात्रों की प्रतिबद्ध क्रियाशीलता (नकारात्मक/सकारात्मक) से गतिशील रहता है।

कथा में कहीं भी ठहराव नहीं है बल्कि निरन्तर प्रवाह है। इसमें समाहित घटना-प्रसंगों को यों अलग किया जा सकता है- सोनवारे नरहरि, संस्थान 'वरदान पुष्प' चौलासिंह (एक खलपात्र), जिलाधिकारी- समवेत त्रिवेदी, पुलिस अधीक्षक- डैनियल डुंगडुंग, विधाता स्टील कंपनी, तिरिल-फुलोदा, तिरिल-नरहरि, नरहरी-संझा, सखानंद-तिरिल। इन प्रसंगों से उपन्यास अपनी कथा पुष्ट करता है। लेकिन इस उपन्यास का मूल स्वर हमारे यहां बढ़ रही बाजारवादी मानसिकता के विरोध का है इसलिए युवाओं के संघर्ष के साथ प्रेम-प्रसंग एकदम घुलेमिले नहीं लगते हैं। भारतीय समाज के यथार्थ और भारतीय जनता की चेतना में प्रेम-त्रिकोण और प्रेम-चतुष्कोण की स्थितियां बहुत कुछ अन्तर्बाधाओं जैसी लगती हैं, क्योंकि हमारे समाज में विवाह कभी आकस्मिक स्थिति नहीं रही है बल्कि इसे एक संस्थागत सामाजिक इकाई के रूप में स्वीकार किया गया है। इसलिए जब चाहें अपनायें/छोड़ें की स्थितियां इतनी आम नहीं हैं। शायद इसी कारण इस कृति में वर्णित प्रेम-प्रसंग पाठक की मन:स्थिति के अनुकूल नहीं हो पाते हैं, किंतु इससे उपन्यास का मूलार्थ प्रभावित नहीं होता है।

उपन्यासकार जयनंदन ने इस उपन्यास में युवाओं की संघर्ष-कथा को अभिव्यक्ति दी है। साथ ही परिवर्तन और सुधार के जिस बिंदु पर इसका समापन किया है, वहां युवा पीढ़ी अपने वजूद को तलाशती रह जाती है। क्योंकि उसके सामने 'विघटन का सच है।

ISSN : 2454 – 308X | Volume : 08 , Issue : 01 | January - March 2022

सन्दर्भ सूचि :

- http://gadyakosh.org/
- https://www.livehindustan.com/news/jamshedpur/article1-Jaynandn-true-stories-Nirmala-675418.html
- https://pahleebar.wordpress.com/
- https://www.naidunia.com/magazine/tarang-nai-hawa-ka-rasta-story-writer-jaynandan-210424
- https://hi.wikipedia.org/wiki/